Munmun Choudhary
Asst. Prof.
Department of Economics
H.S. College
Bikramganj.

B.A. Part - I
Economics Honours
Paper - I
Micro Economics



Topic :- उपभोक्ता का माइक्रो सिद्धांत -
Utility Analysis.

Introduction :-

माँग के सिद्धान्त की व्याख्या उपयोगिता या तुष्टिगुण (Utility) के विश्लेषण के रूप में की जा सकती है। उपयोगिता या तुष्टिगुण विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि प्रकार व्यक्ति अपने साधनों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करके सन्तुष्टि के स्तर को अधिकतम करता है। प्रत्येक व्यक्ति के सामने यह समस्या रहती है कि वह किस प्रकार अपनी सीमित आय को व्यय करें, ताकि उसे अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त हो सके। प्रत्येक व्यक्ति स्वभावत: वस्तुओं एवं सेवाओं के उन संयोगों का चयन करना चाहता है जिनसे उसे अधिकतम कुल उपयोगिता प्राप्त होती है। एक बार यदि व्यक्ति इस प्रकार संयोगों को प्राप्त करने में सफल हो जाता है तो वह इससे विचलित नहीं होना चाहता। इसको 'उपभोक्ता की साम्य की अवस्था' कहा जाता है। उपयोगिता के मुख्यत: दो दृष्टिकोण होता है -

उपयोगिता

1) गणनावाचक दृष्टिकोण (Cardinal Approach)
↓
गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण (Cardinal Utility Analysis)
↓
मार्शल (Marshall)

(2) क्रमवाचक दृष्टिकोण (Ordinal Approach)
↓
क्रमवाचक उपयोगिता विश्लेषण (Ordinal Utility Analysis)
↓
हिक्स एवं ऐलन (J.R. Hicks and R.G.D Allen)

Scanned by TapScanner

## उपयोगिता का अर्थ
## (Meaning of Utility)

जब हम विभिन्न आवश्यकताओं की अनुभूति करते हैं तो उनकी संतुष्टि वस्तुओं अथवा सेवाओं के उपभोग द्वारा करते हैं। इसका अर्थ यह कि वस्तुओं या सेवाओं के इसी गुण या क्षमता को 'उपयोगिता' (Utility) कहते हैं। दूसरे शब्दों में 'वस्तुओं' या सेवाओं की या में मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट करने की जो क्षमता होती है, उसे उपयोगिता कहते हैं। (Utility is the capacity of a commodity or Service to satisfy human wants.) उदाहरण के लिए, भोजन की आवश्यकता को हम रोटी (या अन्य खाद्य पदार्थ) खाकर पूरी कर सकते हैं या बीमार पड़ने पर डाक्टर की सेवा का उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार रोटी (या अन्य खाद्य पदार्थ) तथा डाक्टर की सेवा में उपयोगिता है क्योंकि इनमें हमारी आवश्यकता को संतुष्ट करने का गुण अथवा क्षमता है।

उपयोगिता वस्तुगत (Objective) न होकर आत्मगत एवं सापेक्ष (Subjective and Relative) होती है। यद्यपि उपयोगिता किसी वस्तु या सेवा का वह गुण है जिसमें मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। तथापि उपयोगिता किसी उपयोगिता किसी वस्तु-विशेष के आन्तरिक गुणों पर निर्भर नहीं करती। अर्थात उपयोगिता वस्तुगत (Objective) नहीं होती, उपयोगिता आत्मगत (Subjective) एवं सापेक्ष (Relative) होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि उपयोगिता व्यक्ति विशेष की मनोवृत्ति एवं विभिन्न परिस्थितियों पर निर्भर करती है। एक ही वस्तु की उपयोगिता विभिन्न व्यक्तियों के लिए अलग-अलग होती है।

Scanned by TapScanner

उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी के लिए कलम की उपयोगिता अधिक है वही एक चरवाहे के लिए उसकी कुछ भी उपयोगिता नहीं है। उसी प्रकार एक ही व्यक्ति के लिए विभिन्न समय एंव स्थानों में किसी वस्तु की उपयोगिता अलग-अलग होती है। उदाहरणार्थ, घर या कॉलेज मे विद्यार्थी के लिए कलम की उपयोगिता अधिक है किन्तु एक मंदिर मे उसी विद्यार्थी के लिए उस कलम की उपयोगिता कुछ भी नहीं रह जाती। पुनः किसी व्यक्ति के लिए जाड़े में ऊनी कपड़ों की बहुत उपयोगिता होती है लेकिन उसके लिए गर्मी में ऊनी कपड़ों की उपयोगिता कुछ भी नही होती। इस प्रकार वस्तुओं में ऐसा कोई गुण नहीं होता जिसके आधार पर उनकी उपयोगिता का पता लगाया जा सके। उपयोगिता एक आत्मगत एंव सापेक्षिक (Subjective and Relative) धारणा है जो व्यक्ति एंव उसकी परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है।

उपयोगिता 'आवश्यकता की तीव्रता' (Intesity of wants) पर भी निर्भर करती है। जब हमारे लिये किसी वस्तु की आवश्यकता अधिक तीव्र होती है तो उसकी उसकी उपयोगिता भी हमारे लिये अधिक होती है। दूसरी ओर यदि किसी वस्तु के लिए हमारी उपयोगिता की तीव्रता कम है तो उसकी उपयोगिता भी कम होगी। उदाहरण के लिए, यदि हम भूखे हों तो रोटी की आवश्यकता हमारे लिए अधिक होगी, किन्तु रोटी खाने से ज्यों-ज्यों हमारी भूख मिटती, त्यों-त्यों रोटियों की उपयोगिता हमारे लिये घटती जायेगी।